NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

उत्तर प्रदेश मे रसभरी की वैज्ञानिक खेती

श्री कान्त भारती [1], लव कुमार [2] अरविंद कुमार त्रिपाठी [3]

परिचय:

रसभरी का वनास्पति नाम *फेस्लिस पेरुवियाना* है यह *सोलानेसी* कुल से सम्बधित है रस भरि एक कम समय मे तैयार होने वाली नकदि फसल है रस भरी को भारत मे काई नामो से जाना जाता है। रसभरी का सबसे ज्यादा उत्पादन कोलम्बिया और जिम्बाबय मे किया जाता है जबकि भारत मे रसभरी कि लघु स्तर पर खेती हो रही है जिनमे उत्तर प्रदेश, कोलकाता, मध्य प्रदेश, पंजाब मे किया जा रहा है रस भरी कि खेती उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलो जैसे सीतापुर, लखनऊ, हरदोई, वाराणसी, फतेहपुर, मथुरा आदि सफलता से पूर्वक द्दोटे पैमाने पर किया जा रहा है इसका उपयोग फ्रेश फल, फूड और औषधि पत्ती का काढ़ा ज्वरनाशक, हेपेटाइटिस,ल्यूकेमिया,कैंसर के रूप में प्रयोग किया जाता है

पोषक तत्व : रस भरी मे विटामिन ए,बी,सी और आयरन का अच्छा स्रोत है। इसमे प्रोटीन और फास्फोरस अन्य फलों की तुलना में उच्च मात्रा मे पाया जाता है लेकिन कैल्शियम कम मात्रा मे पाया जाता है रसभरी के फल मे कैरोटेनॉइड,फ्लेवोनोइड और बायोएक्टिव यौगिकों में समृद्ध हैं अन्य फलो कि ऊर्जा 53 कैलोरी,कार्बोहाइड्रेट 11.2 ग्राम,वसा 0.7 ग्राम, प्रोटीन 1.9 ग्राम,विटामिन ए 36 माइक्रो ग्राम, विटामिन सी 11 मिली ग्राम, कैल्शियम 9 मिली ग्राम,आयरन 1 मिली ग्राम ।

जलवायु : पौधे को पूर्ण रुप से प्रकाश की जरूरत है बढ़ते मौसम के दौरान औसत सापेक्ष आर्द्रता 70 से 80 प्रतिशत है यह तेज हवाओं के लिए अतिसंवेदनशील है इसलिए इसकी खेती को हवा से संरक्षित किया जाना चाहिए।

खेत की तैयारी: खेत को 2 से 3 जुताई और 15 से 20 टन एफ वाई एम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से खेत मे मिला के तैयार किया जाता है।

बुवाई का समय : उत्तर प्रदेश मे रसभरी कि बुवाई के लिए अप्रेल से अगस्त माह मे की जाती है रस भरी के अच्द्दे जमाव के लिए 22-28 डिग्री सेटीग्रड तापक्रम दिन मे और 7-13 डिग्री रात्रि सेटीग्रड, आद्रता 85-90 % उपयुक्त है

बुवाई कि विधि : रसभरी कि पौधशाला आमतौर पर बीज के माध्यम से बुवाई किया जाता है। औंसतन 28 ग्राम मे 5,000 से 8,000 बीज होते हैं पौधों को कटिंग या लेयरिंग के माध्यम से बड़े पैमाने पर तैयार करके सीधा खेत मे रोपाई किया जाता है बीज से तैयार पौधो को 15-20 सेटी मी. होने पर खेत मै बुवाई कर देनी चाहिए ।

उपयुक्त मृदा : रस भरी की खेती के अधिकांश मिट्टी के प्रकारों के लिए अनुकूल है और सबसे कम

श्री कान्त भारती [1], लव कुमार [2] अरविंद कुमार त्रिपाठी [3]
शोध छात्र,
1.बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर विश्व विद्यालय, रायबरेली रोड, लखनऊ उत्तर प्रदेश
2.3.आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या उत्तर प्रदेश

उर्वरता और उच्च-उर्वरता वाली मिट्टी में लगाया जाता है,मिट्टी मे क्षारीयता 5.5-6.8 कि हालांकि यह अत्यधिक उपजाऊ रेतीले या जलोढ़ दोमट मिट्टी में खेती के लिए उपयुक्त माना जाता है खेत को तैयार करने के लिए 2-3 बार जुताई उपयुक्त होती और बुवाई के समय खेत मे वाद्दित नमी आवश्यक है ।

उन्नतशील प्रजाति : भारत में रसभरी कि खेती के लिए कोई उन्नतशील प्रजाती परिभाषित नहीं है। उन्नतशील प्रजाति को स्थानीयता के आधार पर विकसित किया जा रहा है जैसे: अलीगढ़, आगरा, इलाहाबाद, फरुखाबाद, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर, लखनऊ और मुजफ्फरपुर।

खाद की मात्रा: उत्तर प्रदेश मे रसभरी की खेती के लिए एक हेक्टेयर मे 100 किग्रा नाइट्रोजन, 60 किग्रा फास्फोरस और 60 किग्रा पोटाश की मात्रा प्रयाप्त होता है इसमे एन. पी. के. की थोडी-थोडी मात्रा को समय -समय पर प्रयोग करते है।

सिचाई और निराई : रस भरी की फसल के लिए ग्रीष्मकाल मे 5 से 6 दिनो, तथा शारद्काल मे 10 से 15 दिनो मे सिचाई करके खेत मे उचित नमी बनाए रहना चाहिए। रसभरी मे पौधो की जडो को नमी व वायु उपलब्ध कराने तथा खरपतवार नियन्त्रण के लिए निराई अति आवश्यक है। सामान्यत: प्रत्येक सिचाई के पश्चात एक निराई की जानी चाहिए। निराई करने से उर्वरक भी मिट्टी मे अच्द्दी से मिल जाता है|

रोग व कीटो का रोकथाम : भारत मे रस भरी के खेत में लाल मकड़िया, कीटों में पतंगे, मक्खियाँ चेफर, रसभरी, जैसे कीट युवा पौधों नुकसान पंहुचा सकते है। इसके लिए नीम की खल पौधों की जड़ों में डाले इसके अलावा पत्तों पर पत्ती स्पाट, ख़स्ता फफूंदी, पत्ता ब्लाइट जड़ सड़न और वायरस से प्रभावित हो सकती है। इसके लिए समय समय पर पोधों के रोगों की पहचान कर विज्ञानिकों की सलाह में कीटनाशक दवाइयों का स्प्रे करे।

जड़ों का सड़ना: जब रसभरी के पौधे महत्वपूर्ण वर्षा के परिणामस्वरूप लगातार पानी के संपर्क में रहते हैं, तो उनकी जड़ें सड़ने लगती हैं। इसे जड़ गलन रोग कहते हैं। पौधों को इस बीमारी से बचाने के लिए, समय से पहले खेत में जल निकासी व्यवस्था तैयार करना महत्वपूर्ण है कैबेंडाज़िम कवकनाशी को 1. ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से रोग नियंत्रण के लिए पौधों और जड़ों के चारों ओर लगाना चाहिए।

मोजेक: रसभरी फसलों में मुजक का प्रकोप आम है। इस बीमारी से बचने के लिए संक्रमित पौधों को उखाड़कर मिट्टी में दबा दें और द्वितीयक संक्रमण को रोकने के लिए लैम्डेसिलोथ्रिन (0.2 एमएल/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

लाल रंग का कीड़ा: सितंबर के प्रारंभ में रसभरी की फसल पर बहुत ही कम लाल रंग

के कीड़ों का प्रकोप दिखाई देता है। यह कीड़ा पत्तियों की निचली सतह पर छिपा रहता है। फसल को संक्रमण से बचाने के लिए लेमडासिलोथ्रिन कीटनाशक का प्रयोग करना चाहिए।

विशेष सावधानियाँ:-

रसभरी की फसल उगाते समय कुछ विशेष सावधानियों की आवश्यकता होती है, जो इस प्रकार हैं:-

(1) रसभरी के पौधों में जब फल लगते हैं तो कभी-कभी एक प्रकार का कीड़ा (गिदर) फलों को हानि पहुँचा देता है। इस कीट को नियंत्रित करने के लिए नीम आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करना चाहिए।

(2) रसभरी की फसल के साथ-साथ अन्य फसलें भी उगाई जा सकती हैं, लेकिन ये फसलें ऐसी होनी चाहिए कि रास्पबेरी की फसल तैयार होने से पहले ही काट ली जाए। गोभी, फूलगोभी, सौंफ, टमाटर, मिर्च और धनिया कुछ ऐसी फसलें हैं जिन्हें पंक्तियों के बीच बोया जाता है और ये सभी रासभरी की फसल तैयार होने से पहले आती हैं।

फल की तुडाई : रसभरी मे फुल आने के लगभग 55 दिनो मे फसल तैयार हो जाता हैं जब रस भरी के फल का ऊपरी आवरण सुख कर हल्के भूरे रंग का हो और फल पीला,नरंगी रंग का हो तब रसभरी की परिपक्य मान लेना चाहिए और 2 से 3 दिनो के अंतराल पर तुडाई करते रहना चाहिए। तुडाई के समय फल को नहीं पकड़ना चाहिए। ऊपर से दण्डी पकड़ना चाहिए।

पैकिंग, भंडारण और बिक्री: रसभरी फलों की पैकिंग इस प्रकार करनी चाहिए कि उनके बंडलों में पर्याप्त मात्रा में हवा का संचार हो। इसके लिए बांस की डली, टोकरियां और प्लास्टिक की क्रेट का इस्तेमाल करना चाहिए। अगर पैकिंग सावधानी से और अच्छे से की जाए तो रास्पबेरी फलों को बिना किसी प्रोसेसिंग के 72 घंटे तक सुरक्षित रखा जा सकता है। बिक्री के लिए तैयार किए गए बंडलों में केवल स्वस्थ, बेदाग और सुंदर फलों को रखना चाहिए। कटे, दाग लगे या अनुपयोगी फलों को निकालकर अलग रख दें। इन्हें नजदीकी बाजार में ले जाकर बेचा जा सकता है। निजी संसाधन उपलब्ध होने पर दूर के बाजारों में बेचकर अधिक लाभ कमाया जा सकता है।